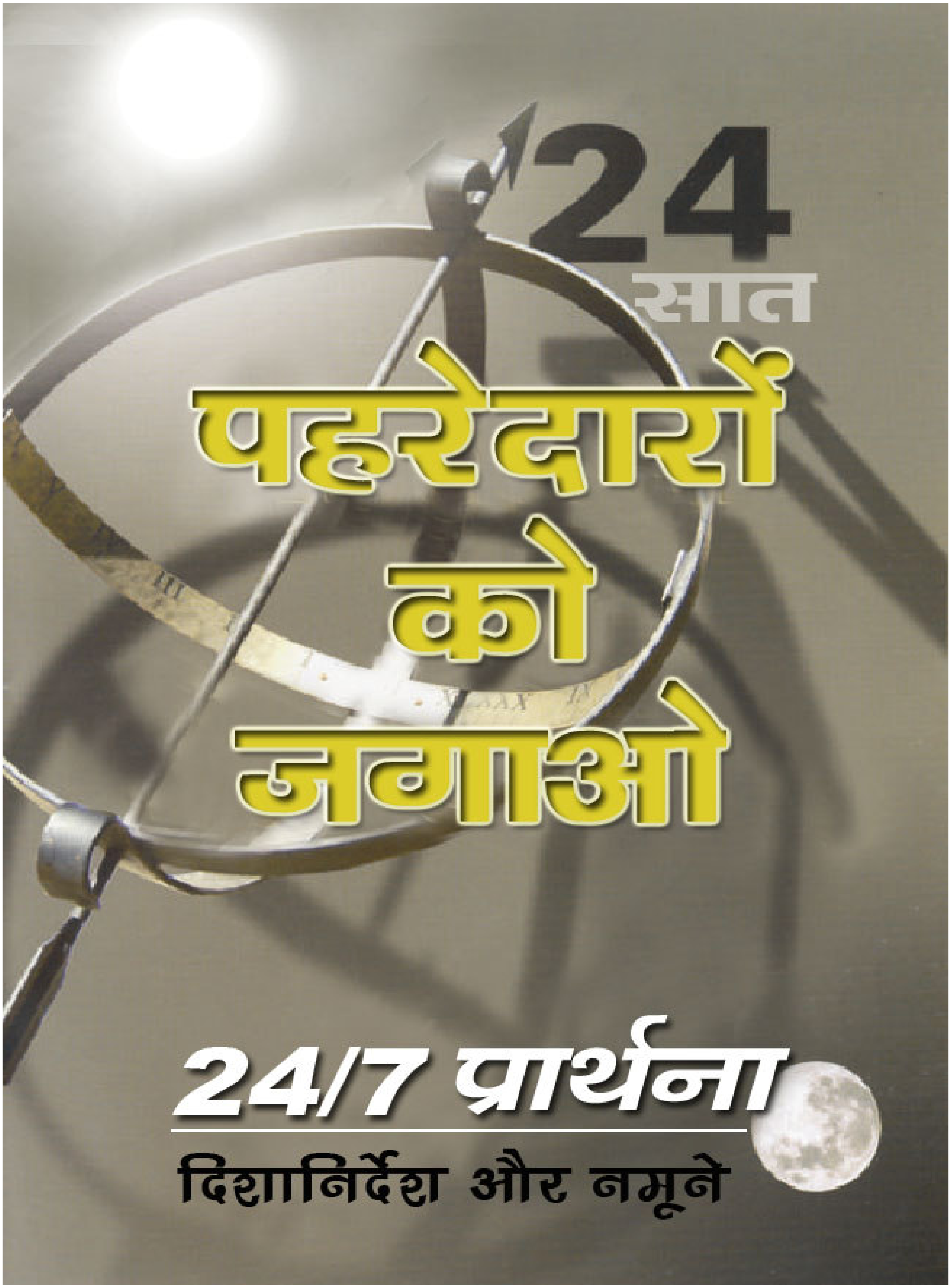
24
सात
पहरेदारों
को
जगाओ
24/7 प्रार्थना
दिशानिर्देश और नमूने

सूची

1. रात और दिन प्रार्थना के नमूने और वृतांत (कहानी) 04

1.1 पुराना नियम 05

1.2 एसेन्स (ESSENES) 05

1.3 पूर्वकाल की इसाई कलीसिया 05

1.4 मिस्री मरुस्थल / रेगिस्तान 05

1.5 मोराबियन्स (Morabians) 06

1.6 अंतर्राष्ट्रीय प्रार्थना का घर (IHOP–कन्सास शहर) 06

1.7 सभी राष्ट्रों के लिए प्रार्थना का घर ''यरूशलेम'' 07

1.8 US/DC प्रार्थना पहरुए, वाशिंगटन DC, USA 07

1.9 इंडोनेशिया में प्रार्थना किले 08

1.10 नशाखोरों के लिए प्रार्थना पहरुए 08

1.11 कलीसियाओं में प्रार्थना के कक्ष 08

1.12 पाँच सप्ताह के प्रार्थना चक्र में पंद्रह नगर 09

1.13 प्रार्थना पहरुओं से भरपूर नगरीय / सार्वजनिक शिविर 09

1.14 युवा और 24 / 7 09

1.15 मसीही संस्थाएँ एवं कलीसियावाद 10

1.16 प्रार्थना पर्वत 10

1.17 वचन प्रार्थना पहरुए 11

1.18 जेलखाने 11

2. रात और दिन प्रार्थना के कारण 12

2.1 बाइबिल आधारित रात–दिन प्रार्थना 12

2.2 रात और दिन प्रार्थना के लाभ 14

2.3 बाइबिल में ''पहरूआ'' शब्द की व्याख्या 14

2.4 प्रार्थना और कार्य 15

3. सामान्य दिशा–निर्देश 17

3.1 प्रार्थना पहरुओं के लिए स्थान 17

3.2 लोगों को शामिल करने के लिए विभिन्न प्रयास 17

3.3 सहभागिता का आयाम/अधिकता 18

3.4 रात–दिन प्रार्थना पहरुओं के विभिन्न नाम 18

3.5 प्रार्थना पहरुओं के उद्देश्य 19

3.6 सहायक वेबसाइटें 19

4. प्रार्थना कक्ष का संचालन कैसे करें 20

4.1 24/7/365 प्रार्थना पहरुओं के लिए दिशा–निर्देश 20

4.2 स्थानीय कलीसिया में 24/7/365 प्रार्थना पहरुओं की स्थापना के महत्त्व और मूल–सिद्धांत 21

4.3 सीमित समय के लिए प्रार्थना पहरुओं को स्थापित करने के दिशा–निर्देश 22

4.4 प्रार्थना पडावों के साथ वार्तालापीय प्रार्थना कक्ष का उदाहरण ... 25

5. प्रार्थना में एक घंटा कैसे व्यतीत करें : एक घंटा प्रार्थना की रुपरेखा ... 31

1. रात और दिन प्रार्थना करने के नमूने (आदर्श और वृतांत)

1990 ई0 के आरम्भ से ही समस्त विश्व में सप्ताह के सातो दिन चौबीसों घंटे (24/7) प्रार्थना चौकसी पर जोर दिया जा रहा है। यह पहल परमेश्वर द्वारा प्रेरित किया गया और यह बहुत तेजी से पूरे विश्व में फैल रहा है। 1990 ई0 के मध्य में, विश्वस्तर पर केवल कुछ ही दर्जन प्रार्थना पहरुये चौबीसों घंटे सक्रिय थे। दस वर्षों के पश्चात् ये बढ़कर हजारो की संख्या में हो गई है। 24/7 प्रार्थना पहरुओं का उद्देश्य दीवारों पर पहरेदारों को नियुक्त करना है ताकि कलीसियाओं की बढ़ोत्तरी हो, प्रदेश और राष्ट्र दिन और रात परमेश्वर के दया के सिंहासन के पास स्तुति, आराधना और मध्यस्थता के साथ आवें।

कलीसियाओं, नगरों, शहरों, देशों और महाद्वीपों के मसीही, परमेश्वर के सिंहासन के सामने प्रत्येक दिन के चौबीसों घंटे उसकी स्तुति और आराधना के लिए और कलीसिया की जागृति एवं विश्व स्तरीय सुसमाचार साथ ही साथ समुदायों, शहरों और देशों के परिवर्त्तन तथा चंगाई के लिए प्रार्थना करने के लिए सुसज्जित होकर सक्रिय है। इस प्रकार महान आदेश और महान आज्ञा पूरा किया जा रहा है। हजारों कलीसियाओं को उनके अपने समाजों में चौबिसों घंटे प्रार्थना पहरुओं को नियुक्त करने के लिए बुलावा देना मुख्य विचार है। हमारा आरम्भिक कदम अलग–अलग सभाओं (कलीसियाओं) को ऐसा तैयार करना जो कि सप्ताह में कम से कम एक दिन 24 घंटा, प्रार्थना करना आरम्भ करें और जब ये सुव्यवस्थित हो जाये तब प्रार्थना के दिनों की संख्या एक दिन से अधिक बढ़ा दें।

दूसरे कदम में कलीसियाओं को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया गया है कि वे 24/7/365 प्रार्थना पहरुओं को समूह के तैयार करें और अन्य कलीसियाओं के साथ मिलकर उनके समाज, शहर, नगर तथा देश के लिए सालोंभर हर दिन 24 घंटा प्रार्थना करें, इस विचार को संसार के हर एक देश में स्थापित करना ही हमारा सपना है।

उदाहरण के लिए तीसरे कदम का विकल्प साल में एक या दो बार स्थानीय कलीसियाएं 7, 10 या 21 दिनों तक लगातार 24/7 प्रार्थना का आयोजन करें।

इसका लक्ष्य दुनिया के हर नगर, शहर और हर महादेशों में प्रार्थना पहरुओं को नियुक्त करना है ताकि टूटे और बिगड़े संसार के लिए प्रार्थना का अडिग धारा परमेश्वर के राजसिंहासन के सामने लाया जा सके।

निम्नलिखित अनुच्छेद कलीसिया के इतिहास में रात और दिन प्रार्थना के कुछ उदाहरणों को प्रस्तुत करते हैं :—

1.1 पुराना नियम

निर्गमन और लैव्यव्यवस्था में हम पढ़ते हैं कि याजकों को मंदिर में आग जलाये रखना पड़ता था (लैव्यव्यवस्था 6:12–13)। परमेश्वर उस आज्ञा के प्रति बहुत दृढ़ था कि वेदी पर का आग कभी भी बुझने न पाए। याजक बारी–बारी करके अपने कार्य को करते थे ताकि मंदिर दिन के चौबीसों घंटे प्रार्थना, आराधना और गीतों से भरा रहे।

1.2 एसेन्स (ESSENES)

यीशु मसीह के दिनों में, यहूदियों के चार शाखाओं में से एक "ESSENSE" 24 घंटे प्रार्थना करने में विश्वास करता था, सामाज 3 भागों में बांटा गया था ताकि हर तीसरे दिन वे पारी बदल सकें और रात भर जागते हुए प्रार्थना कर सकें।

1.3 पूर्वकाल की मसीही कलीसिया

आदि कलीसिया का जन्म 24/7 प्रार्थना के द्वारा हुआ, इस बात को स्वीकारा गया है कि चेले 10 दिन तक प्रार्थना करते रहे इससे पहले कि पेन्तिकोस्त के दिन उनपर आत्मा उडेला गया।

1.4 मिस्री मरुस्थल/रेगिस्तान

तीसरी और चौथी शताब्दी में मिस्र में बहुत से इसाई, प्रार्थना और मनन करने के लिए मरुस्थल गये बहुत से धार्मिक पुरुष और स्त्री मरुस्थल में बस गये। आज इन लोगों में से कुछ लोगों का काम अभी भी प्रकाश स्तंभ है। यह समयावधि प्रायः मरुस्थल के पिताओं के रुप में प्रमाण देता है। निम्नलिखित बात एक उसी प्रकार के प्रार्थना पहल का उदाहरण है– मिस्र के मरुस्थल के पश्चिमि भाग में एक क्षेत्र वादी ए नैटरन (नमक की घाटी) के रुप में जाना जाता है। संत मैकरियोंस ने चार आश्रम स्थपित किये (ये आश्रम उस क्षेत्र में स्थापित मात्र आश्रम ही नहीं बल्कि उदाहरण के तौर पर कार्यरत है)। आठ हजार से दस हजार के बीच सन्यासी इन आश्रमों के निकट रहते थे (लगभग कुल चालीस हजार)। प्रार्थना उनका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य था। वे दिन में बारह से बीस घंटे प्रार्थना करते थे । प्रतिदिन वे 150 भजन संहिताओं भविष्यवाणियाँ और नये नियम के विस्तृत भागों के द्वारा क्रमानुसार प्रार्थना करते थे। यह प्रार्थनाएँ रात और दिन परमेश्वर को चढ़ाया जाता था जो जागृति को जंगल की आग की तरह मिस्र से

इथोपिया, सिरीया, ग्रीस और यूरोप और रुस के अन्य भागों में फैलने के लिए मार्ग दर्शक बना। सुसमाचार पूरे उतरी अफ्रीका के प्रत्येक भाग में फैल गया। प्रार्थना संयासी चौबीसों घंटे प्रार्थना में व्यस्त रहते थे। वे दिन और रात परमेश्वर के वचन और वायदाओं पर आधारित प्रार्थना करते थे। विश्वासी मरुस्थल पिताओं की प्रार्थना की जीवन शैली से बहुत कुछ सीख सकते हैं । प्रार्थना में आज ज्यादातर संगठित/सामूहिक रुप में प्रार्थना हो रहा है। इस सिद्धांत में शक्ति है लेकिन कमजोरी भी है। क्योंकि जरुरी नहीं है कि ये एक विश्वासी के निजी प्रार्थना जीवन में आवश्यक रुप से बढ़ोतरी करे।

1.5 मोराबियन्स (MORAVIANS)

1727 में, मोरावियन्स हिरनहट में सालों भर प्रतिदिन चौबिसों घंटे 24/7/365 प्रार्थना पहरुआ का शुरुआत किया गया जो 125 वर्षों तक चलता रहा। यह 48 पुरुषों और महिलाओं के साथ शुरु हुआ जो जोड़े बनाकर एक समय में एक घंटे प्रार्थना करते थे। बाद में उनके साथ और भी विश्वासी, जवान लोग और बच्चे भी शामिल हो गए। पिछले 200 वर्षों में पूरे प्रोटेस्टेन्ट कलीसियाओं ने जितने मिशनरियों को भेजा था उनसे कहीं अधिक मिशनरियों को 25 साल के अन्दर 600 सदस्यों वाली छोटी कलीसिया ने भेजा, अन्य बातों के बीच अठारहवीं शताब्दी में आयी जागृति, कई देशों में मोराबियन कलीसिया स्थापना तथा मेथोडिस्ट कलीसिया का उदभव भी इस प्रार्थना पहरुये के परिणाम हैं।

1.6 अंतर्राष्ट्रीय प्रार्थना का घर (IHOP–कन्सास शहर)

1980 ई0 के मध्य में परमेश्वर ने माइक बिकल को प्रार्थना का जीवन जीने के लिए बुलाया। उसने बहुत से प्रार्थना समूहों को स्थापित किया और लोगों को उत्साहित किया कि वे प्रतिदिन ज्यादातर समय प्रार्थना में व्यतीत करें। लगभग तेरह सालों के बाद इन प्रार्थना समूहों ने प्रतिदिन बारह घंटे प्रार्थना चौकसी को शुरु किया और 1999 से 24/7/365 प्रार्थना पहरुएँ कन्सास शहर में होता आ रहा है।

यह विश्वस्तरीय प्रार्थना का घर कहलाता है। इन मध्यस्थताओं का उद्देश्य पूरे विश्व में इसी तरह के प्रार्थना पहरुओं की स्थापना करना है। माइक बिकल और उसके साथ काम करने वाले सहयोगियों ने प्रार्थना का नमूना तैयार किया है जिसे Harp and Bowl (वीणा और कटोरा) कहा जाता है, इस प्रार्थना के रुपरेखा में वचन स्तुति–आराधना, आत्मिक युद्ध और मध्यस्थता की

प्रार्थना अनोखे रीति से सम्मिलित हैं (www.fotb.com) प्रार्थना की यह रुप–रेखा को प्रार्थना की भट्ठी के रुप में वर्णित किया जा सकता है, दाऊद के मिलाप वाले तम्बू में हर दिन 24 घंटा प्रार्थना चढ़ाया जाता था।

1.7 सभी राष्ट्रों के लिए प्रार्थना का घर "यरूशलेम"

सभी राष्ट्रों के लिए प्रार्थना का घर यरूशलेम की स्थापना टॉम हेस (Tom Hess) के द्वारा की गई थी। 1987 में वह चौबीसों घंटे प्रार्थना पहरूएँ की स्थापना करने के लिए यरूशलेम गया ताकि यरूशलेम की शांति और दुनिया के राष्ट्रों के लिए प्रार्थना करें । यरूशलेम के चौकसी द्वार इस प्रार्थना के भाग थे : 12 प्रार्थना दल प्रतिदिन 2 घंटों तक यरूशलेम के बारहों फाटकों पर प्रार्थना करते है। सितम्बर 1999 में हेस ने चौबीसों घंटे प्रार्थना पहरूओं का पहला सभा आरम्भ किया। इस सभा में बहुत से राष्ट्रों ने प्रतिनिधित्व किया और हेस पूरे विश्व में चौबीसों घंटे प्रार्थना पहरुएँ की स्थापना के लिए वर्तमान में हेस कठिन परिश्रम कर रहे हैं ताकि पूरे संसार में 24 घंटे प्रार्थना पहरुओं को स्थापित कर सके, पिछले 10 सालों के दौरान इस्राएल में बहुत से अन्य प्रार्थना पहरुओं की स्थापना की गई है। (www.jhopfan.org/ancj@jhopf an.org)

1.8 US/DC प्रार्थना पहरुए, वाशिंगटन DC, USA

1988 में राष्ट्रीय मसीही अगूवों ने वाशिंगटन DC में सप्ताह भर का 24 घंटा प्रार्थना का आयोजन योजनागत स्थानों में किया उसका परिणाम उत्साहजनक था, अगुवे यह अनुभव किया कि प्रभू चाहता है कि वे लगातार प्रार्थना में ध्यान देते रहें, लेकिन वे इस बुलाहट को पूरा नहीं कर पाये, कुछ भी हो 1997 में प्रार्थना के लिए एक नया बुलाहट आया और US/DC प्रार्थना पहरुआ एक नेशनल प्रेयर वाच (नेशनल प्रार्थना पहरुये) के रुप में USA के लिए हर दिन 24 घंटे प्रार्थना करने के लिए स्थापित हुआ जिसका विशेष लक्ष्य वाशिंगटन DC के प्रधानमंत्री और परमेश्वर के योजनानुसार संसार के साथ USA के रणनीति तरीका था। प्रार्थना कलेन्डर उन व्यक्तियों एवं समूहों के नाम से बना जिन्होंने महीना में एक बार किसी खास समय हर सप्ताह कम से कम एक घंटा प्रार्थना करने के लिए अपने आप को समर्पित किया 2005 में 3 मिलियन से भी अधिक मध्यस्थता प्रार्थना पहरुएँ इस प्रार्थना पहरुओं में शामिल थे।

1.9 इंडोनेशिया में प्रार्थना के किले

राष्ट्रीय प्रार्थना नेटवर्क के कार्यों द्वारा इंडोनेशिया में 500 से भी अधिक शहरों में प्रार्थना गढ़ों की स्थापना हुई तथा लगभग 16 से भी अधिक मध्यस्थों ने इसी तरह के प्रार्थना गढ़ों की जिम्मेदारियों को लिया है कि इन प्रार्थना चौकसियों में प्रार्थना करें। उन्होने एक दिन में चार घंटों की पारी बांधी। सप्ताह के दौरान दूसरे लोग (व्यक्तिगत एवं समूह के रुप में) जो प्रार्थना करना चाहते थे बारी–बारी से प्रार्थना करने के लिए अपने निश्चित समय में आने लगे। कभी–कभी मध्यस्थ एक महीने के लिए या उससे अधिक समय तक प्रार्थना में लगे रहते थे और दूसरे उनके समय पूरा होने के बाद उतने ही समय के लिए उनका स्थान ले लेते थे। इतना तक कि बच्चे भी जिनकी उम्र 4 से 14 वर्षों के बीच होती थी, प्रार्थना किले में किये जाने वाले प्रार्थना में शामिल होते थे।

1.10 नशाखोरों के लिए प्रार्थना पहरुए

दक्षिण अफ्रीका के प्रिटोरिया में एक पास्टर की पत्नी जिसका बेटा नशा का आदी था, उसने अपने बेटे के लिए बड़ी दृढ़ता के साथ प्रार्थना करना आरंभ किया, 2001 में उसने माता पिताओं का एक ऐसा समूह पाया जो महीना के अन्तिम शुक्रवार को रात भर अपने बच्चों के लिए जो नशे के आदि है प्रार्थना करते थे। तीन सालों (2001–2004) के अन्दर यह रात भर प्रार्थना की समूह बढ़कर इस प्रकार की 36, 24/7/365 प्रार्थना की कड़ी हो गई जो ऐसे बच्चों के लिए प्रार्थना करती थी जो नशे के आदी थे। चार सालों के बाद विभिन्न प्रार्थना पहरुओं में 30,000 से भी अधिक व्यक्तियों की बढ़ोत्तरी हुई जो सप्ताह में कम से कम एक घंटा नशे के लत में पड़े लोगों के लिए प्रार्थना करते थे।

1.11 कलीसियाओं में प्रार्थना के कक्ष

1990 में पास्टर टैरी टैकल (संयुक्त राज्य अमेरिका) ने अपने कलीसिया में सप्ताह के सातों दिन चौबिसों घंटे प्रार्थना करने के लिए प्रार्थना कक्ष की स्थापना की। यह बहुत सफल रहा, तब से पास्टर टैकल संयुक्त राज्य अमेरिका के सभी स्थानीय कलीसियाओं तथा विश्व के अन्य देशों में भी कलीसियाओं में सैकड़ों प्रार्थना कक्षों की स्थापना में सक्रिय रुप से शामिल रहे हैं।

1.12 पाँच सप्ताह के प्रार्थना चक्र में पंद्रह नगर

दक्षिण अफ्रिका के प्रान्तों के एक ग्रामीण क्षेत्र में मई 2004 में, 31 दिनों के दौरान 28 मध्यस्थों के समूह / दल ने रात और दिन प्रार्थना किया। उसके बाद वे 15 छोटे नगरों को रात और दिन के प्रार्थना पहरुओं में शामिल करने के लिए उन तक पहुँचे। उन्होंने सप्ताह के 168 घंटों को तीन नगरों में बांटा जो पूरे 24 / 7 प्रार्थना सत्र को करने की जिम्मेदारी उठाये। वर्त्तमान में वे अन्य चार नगरों में इसी तरह के प्रार्थना पहरुओं की स्थापना में व्यस्त हैं।

1.13 प्रार्थना पहरुओं से भरपूर नगरीय/सार्वजनिक शिविर

दक्षिण अफ्रिका ''सोबेतो'' के Orange Farm नामक नगर में जहाँ 13 लाख निवासी हैं एक पास्टर इस विचार के साथ आया कि पूरे नगर को प्रार्थना पहरुओं से भर दे, वह नगर 10 भागों में बांटा गया है और उसके चारों ओर 10 छोटे नगर हैं उस पास्टर ने 20 भागों में प्रार्थना पहरुओं को स्थापित किया, वर्तमान में 62 प्रार्थना पहरुए, कलीसियाई आधार पर चल रही है (जिनमें कम से कम 25 जन दिन में 24 घंटा प्रार्थना कर रहे हैं), जिसमें उस नगर के सभी कलीसिया 40 प्रतिशत सहभागी हैं। पुलिस रिपोर्ट बताती है कि बीते 6 महीनों में अपराध 20 प्रतिशत की दर से हर महीना कम हो गई, लोगों का एक अडिग धारा है जो प्रभु यीशु को अपने उद्धारकर्त्ता के रुप में स्वीकार कर रहे हैं वे बहुत से चंगाइयों को देखे, शादी–शुदा जिन्दगी और परिवार के पूणर्निर्माण को देखे साथ ही दुष्टआत्माओं से छुटकारा को भी देखे।

1.14 युवा और 24/7

1999 में इंग्लैण्ड के युवाओं के बीच एक बहुत ही प्रभावशाली प्रार्थना पहल की शुरुआत हुई। सितम्बर 1999 में, इंग्लैण्ड के साउथ एम्पटन के निकट एक छोटे शहर ''चिचेस्टर'' के एक कलीसिया में पेटी ग्रेइग ने 200 युवाओं को चुनौती दिया कि वे 30 दिनों तक चौबिसों घंटे अपने साथियों के लिए प्रार्थना करें। उन्होंने तीन महीने से ज्यादा रात और दिन प्रार्थना कियां दिसम्बर 1999 में एक नये प्रार्थना पहल की स्थापना की गई। 2005 में युवाओं के बीच में यह पहल 24 / 7 के नाम से प्रचलित हो गया। युवाओं के समूहों द्वारा किसी जगह को रचनात्मक ढंग से सजाया जाता ताकि उसे प्रार्थना कक्ष के रुप में उपयोग कर सकें, और वे 168 घंटों तक सोमवार से रविवार तक प्रार्थना करते। कुछ उदाहरण ऐसे भी हैं जिसमें कई सप्ताहों तक प्रार्थना चौकसी जारी रहता था। जब ये प्रार्थना पहरुए सालों भर प्रतिदिन 24 / 7 प्रार्थना बने तो वे

गरमाहट उत्पन्न करने वाला कमरा (Boiler Room) के रुप में पुकारे जाने लगे। 24/7 प्रार्थना पहरूएँ गरमाहट उत्पन्न करने वाला कमरा (Boiler Room) के रुप में बहुत ज्यादा प्रचलित होने लगा। 2006 के शुरुआत में पहले से ही 65 देशों में यह 24/7 प्रार्थना पहल जड़ पकड़ चुकी थी और यह अभी भी बढ़ती जा रही है। (www.24-7prayer.com)

1.15 मसीही संस्थाएँ एवं कलीसियावाद

इंग्लैण्ड के युवाओं के बीच जो 24/7 प्रार्थना पहल की शुरुआत की गई थी उसमें धीरे–धीरे एक नई प्रवृति का विकास हुआ। शुरुआत में ही आस्ट्रेलिया में Salvation Army और फिर इंग्लैण्ड में उनके 52 प्रार्थना शाखाओं से 24/7 प्रार्थना करने का अनुरोध किया। अचानक इन शाखाओं ने गवाही देना शुरु किया कि वह विशेष शाखा जिसमें प्रार्थना किया जा रहा था वहाँ का वातावरण बदल गया। कुछ शाखाओं ने यह सूचना दी कि पश्चताप करने वालों की संख्या तीन गुणी हो गई और असाधारण तरीके से बढ़ोत्तरी हो रही थी। पश्चिमी यूरोप के 16 क्षेत्रों में (Youth With A Mission) पूरे साल नियुक्त किये जिसमें हर क्षेत्र एक सप्ताह की पारी लेकर अपनी जिम्मेदारी को उठाया और पूरे साल को प्रार्थना से भर दिया। 2005 के शुरुआत में मात्र इंग्लैण्ड में 13 कलीसिया विशेष और मसीही संस्थाएं पूरे साल को 24/7 प्रार्थना से भरना आरंभ कर दिये।

1.16 प्रार्थना पर्वत

दक्षिणी कोरिया प्रार्थना पर्वतों के लिए जाना जाता है। कई कलीसियाएं पहाड़ों पर विशेष जगहों को स्थापित (नियुक्त) किये हैं जहाँ लोग दिन रात प्रार्थना करने के लिए जा सकते हैं, इनमें से अधिकतर जगहों में ठहरने की पर्याप्त व्यवस्था दी जाती है, साथ ही मनन स्थल, प्रचार कक्ष प्रार्थना पड़ाव तथा प्रार्थना के लिए विशेष जगह जहाँ कोई भी प्रार्थना कर सके उपलब्ध होती है। मसीही लोग अनेकों बार वहाँ प्रार्थना (उपवास) के लिए 40 दिनों तक के अवधि के लिए भी जाते हैं। प्रार्थना पर्वत पर प्रार्थना करने वालों का लगातार आवागमन होता रहता है, वे अपने व्यक्तिगत बातों के लिए और देश के लिए दक्षिणी कोरिया और पूरे विश्व के लिए प्रार्थना करते हैं, इन जगहों में दक्षिणी कोरिया के राजनीतिक बातों एवं देश में कलीसिया बढ़ोतरी के लिए प्रार्थना पर्वत के इन जगहों पर आरोपित/रोपण किया जाता है।

1.17 वचन प्रार्थना पहरुए

6–15 मई 2005 में 10 दिवसीय रात–दिन प्रार्थना सभा के दौरान प्रीटोरिया, दक्षिण अफ्रीका के एक कलीसिया में तीन प्रार्थना पहरुओं की स्थापना हुई जो सिर्फ वचनों से प्रार्थना करते थे। प्रथम प्रार्थना कक्ष में मध्यस्थ उत्पत्ति से लेकर प्रकाशित वाक्य तक बाइबल पढ़ते और 240 घंटों तक प्रार्थना करते थे। दूसरे प्रार्थना कक्ष में वे भजन संहिता पढ़ते, यीशु के द्वारा किये गये प्रार्थना और पुराने नियम में वर्णित प्रार्थनाओं के अनुसार प्रार्थना करते थे। तीसरे प्रार्थना कक्ष में बाइबल के अन्य भागों को पढ़ते थे (हजारों प्रतिज्ञाओं, आज्ञाओं, नये नियम में प्रेरितों की प्रार्थना, परमेश्वर के चरित्र पर आधारित वचन तथा मनुष्यों के साथ परमेश्वर के उद्देश्य इत्यादि को पढ़कर प्रार्थना करते थे)। 17–23 अक्टूबर 2005 में स्थानीय कलसियाएं एवं कलीसियाओं के कई समूह दक्षिण अफ्रिका के सैकड़ो जगहों में एक जुट हुए ताकि वचनों को 168 घंटे पढ़कर प्रार्थना करें (उत्पति से लेकर प्रकाशित वाक्य तक साथ ही भजन संहिता दुहराते हुए)

1.18 जेलखाने

अर्जेटीना के अनेकों जेलखानों में मसीहियों ने प्रभावशाली 24/7/365 प्रार्थना पहरुओं को स्थापित किया है। (Olmos-और 'मसीह एकमात्र आशा' जेलखाना) वे उनके साथ रहने वालों के लिए उनके परिवारों के लिए समुदायों के लिए देश के लिए, एवं समस्त संसार के लिए प्रार्थना कर रहे हैं; अर्जेटीना के जेलखानों में खास प्रकार का बदलाव आया है। आसाधरण गवाही और उनके साथ रहनेवालों के जीवन शैली में बड़े परिवर्तन की गवाही है। अधिकांश फल रात–दिन लगातार प्रार्थना करने का परिणाम है। पिछले 2 सालों में दक्षिण अफ्रिका के अनेक जेल खानों में कई बार 7 दिनों के लिए रात–दिन प्रार्थना किया गया।

2. रात और दिन प्रार्थना करने का कारण

2.1 बाइबिल आधारित रात-दिन प्रार्थना

रात और दिन प्रार्थना करने की संकल्पना बाइबल के बहुत से वचनों और बाइबिल में वर्णित सिद्धांतों पर आधारित है :

1. परमेश्वर दिन के चौबिसों घंटों हमारी हिफाजत करता है (भजन संहिता :121) और उसके वचन में हम पाते हैं की वह अर्जी करता है कि हम जागते हुए उसके साथ प्रार्थना करें। प्रकाशितवाक्य (4–5) बतलाता है कि स्वर्गदूत और 24 धर्म वृद्ध (Elders) दिन और रात लगातार परमेश्वर की आराधना करते हैं। बाइबल हमें इस तरह से प्रार्थना करना सिखलाता है कि परमेश्वर की इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही इस पृथ्वी पर भी पूरी हो, स्वर्ग में चौबिसों घंटे स्तुति, आराधना और मध्यस्थता होती रहती है। यह सिर्फ चौबीसों घंटे प्रार्थना पहरुओं की स्थापना के द्वारा ही संभव हो सकता है।
2. पुराने नियम में हम पाते हैं कि वेदी पर आग हमेशा जलती रहती थी। (लैव्यव्यवस्था 6:12,13 में इस बात का वर्णन कुछ इस प्रकार से है ''वेदी पर अग्नि जलती रहे, और कभी भी बुझने न पाए। और याजक प्रतिदिन सबेरे उस पर लकड़ियां जलाकर होमबलि के टुकड़ों को उसके ऊपर सजाकर रख दें, और उसके ऊपर मेलबलि के पशुओं की चरबी को जलाया करें। वेदी पर आग लगातार जलती रहे, वह कभी बुझने न पाए (लैव्यव्यवस्था 6:12–13)। याजक के दो महत्वूपर्ण काम थे : (क) मध्यस्थता (चढ़ावे और प्रार्थना के द्वारा) और (ख) स्तुति और आराधना वेदी का आग याजकों द्वारा निरंतर/लगातार किया जानेवाला स्तुति, आराधना, मध्यस्थता और परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कराने के लिए चढ़ाये जाने वाले चढ़ावे मेलबलि का प्रतीक है।
3. स्वयं परमेश्वर ने हमें पहरुओं/पहरेदारों के रुप में नियुक्त किया है ताकि उसके वायदों को पूरा होने के लिए प्रार्थना करें। ''हे येरुशलेम, मैंने तेरी शहरपनाह पर पहरुए बैठाए हैं, वे दिन रात कभी चुप न रहेंगे। हे यहोवा को स्मरण करने वालों, चुप न रहो, और जब तक वह यरुशलेम को स्थिर करके उसकी प्रशंसा पृथ्वी पर न फैला दें, तब तक उसे भी चैन न लेने दो (यशायाह 62:6–7)। ध्यान दें : (क) स्वयं परमेश्वर ने पहरुओं को नियुक्त किया है (ख) उन्हें 24 घंटे परमेश्वर के सम्मुख बने रहना चाहिए और (ग) पहरुओं को तब तक परमेश्वर से प्रार्थना करते रहना चाहिए और परमेश्वर को चैन लेने नहीं देना चाहिए जब तक उसका वायदा पूरा न हो जाय। परमेश्वर के वचन में उसके बच्चों के

लिए हजारों वायदें हैं और बाईबल हमें प्रेरित करती है कि हम लगातार उन वायदों की पूर्ति के लिए प्रार्थना करते रहें।

4. लूका 18:7 में परमेश्वर ने वायदा किया है कि वह हमारा न्याय करेगा, यदि हम उसे रात–दिन पुकारें तो उन बातों को सुधारेगा जो गलत है (अपराध, आतंक, गरीबी, नशाखोरी, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, अन्याय, टूटे–विवाह और विश्वव्यापी रोग ''एड्स'') क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं का न्याय न चुकायेगा, जो रात–दिन उसकी दुहाई देते रहते हैं। और क्या वह उनके विषय में देर करेगा? (लूका 18:7)
5. पौलूस की पत्रियाँ कलीसिया के लिए तथा सुसमाचार के बढ़ोतरी के लिए बारम्बार रात–दिन प्रार्थना के लिए प्रोत्साहित करती है।
6. रात और दिन स्तुति और आराधना के द्वारा परमेश्वर पिता की सेवा करना, उसकी उपस्थिति और मित्रता में बढ़ते जाना। प्रकाशित वाक्य 4:8–11: चारो प्राणियों के छः छः पंख हैं उनकी चारो ओर और भतीर की ओर आँखें ही आँखें हैं। वे रात दिन बिना रुके हुये यह कहते हैं कि ''सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर पवित्र, पवित्र, पवित्र है, सर्वव्यापी वह था, वह है, और वह आने वाला है।'' ''जब–जब वे प्राणी उसकी जो सिंहासन पर बैठने वालों के समने दण्डवत् करते हैं और उसकी जो युगानुयुग जीवित हैं, वंदना करते हैं वे अपने अपने मुकुट सिंहासन के सामने डालकर यह कहते हैं: ''हे हमारे प्रभु और परमेश्वर ! तू ही महिमा, आदर और सामर्थ के योग्य है, क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएं रची हैं। वे तेरी ही इच्छा से थीं और सृजी गई।'' ''
7. वर्तमान पीढ़ी के युवाओं के लिए प्रार्थना ताकि वे परमेश्वर के पास लौट आएँ और परमेश्वर का भय मानने वाले स्त्री और पुरुष बनें जो उसके महान आज्ञा और महान आदेशों को पूरा करें। विलापगीत 2:18–19: ''वे यहोवा की ओर तन मन से पुकारते हैं। हे सिय्योन की कुमारी अपने आँसू रात–दिन नदी की नाई बहाती रह! तनिक भी विश्राम न ले, न तेरी आँख की पुतली चैन ले। रात के हर पहर के आरंभ में उठकर चिल्लाया कर! यहोवा के सम्मुख अपने मन की बातों को धारा की नई उण्डेल। तेरे बालबच्चे जो हर एक सड़क के सिरे पर भूख के कारण मूर्च्छित हो रहे है, उनके प्राण के निमित अपने हाथ उसकी ओर फैला।''

2.2 रात और दिन प्रार्थना के लाभ

1. 24/7 प्रार्थना पहरुएँ के द्वारा एक कलीसिया राष्ट्रों के लिए प्रार्थना का घर बनकर परमेश्वर की आज्ञा को पूरा कर सकती है (यशायाह 56:7)। 24/7 प्रार्थना पहरुओं को अपनाने के द्वारा पूरे विश्व की कलीसिया अपने समुदायों, अपने देश और अन्य देशों के लिए पहरुओं के रुप में जिम्मेदारी को उठाने में समर्थ हैं।
2. 24 घंटों की स्तुति, आराधना और मध्यस्थता परमेश्वर के साथ मध्यस्थता के एक नये गहरे आयाम के संबंध को लाता है।
3. 24 घंटों का प्रार्थना पहरुये का केंद्रबिन्दु परमेश्वर के राज्य के लिये आत्माओं को जीतना है।
4. प्रार्थना पहरुआ रात–दिन हमें अपनी जरुरतों/आवश्यकताओं और अपने समुदाय की आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना करने का अवसर प्रदान करता है।
5. रात–दिन किया जाने वाला प्रार्थना हमें प्रार्थना में दृढ़ रहने और निरंतर प्रार्थना करने में हमारी सहायता करता है जैसा वचन हमें आज्ञा देता है।
6. 24 घंटो वाला प्रार्थना पहरूए विश्वासियों के बीच एकता को बढ़ाता है क्योंकि वे एक ही विषयों पर ध्यान देते हैं और उन विषयों के लिए एक साथ /एक जुट होकर प्रार्थना करते हैं यह कलीसियाओं और विभिन्न कलीसियावाद को भी एक साथ मिलाता/बांधता है।
7. यह प्रत्येक मध्यस्थ और प्रार्थना समूहों/दलों को समझने में मदद करता है कि उन पर जिम्मेदारी है और यह उन्हें मजबूत बनाता है यह जानने के लिए कि वे अकेले प्रार्थना नहीं कर रहे हैं, और यह बहुत से लोगों के लिए प्रोत्साहन का बड़ा कारण है।
8. इतिहास गवाह है कि रात–दिन प्रार्थना करने के द्वारा समुदायों और विश्व में गहरा प्रभाव पड़ा है।

2.3 बाइबिल में "पहरूआ" शब्द की व्याख्या

उत्पति 2:15 में परमेश्वर ने मानवजाति को अपने प्रतिनिधि, अदन वाटिका के पहरेदार और संरक्षक के रुप में नियुक्त किया। "पहरेदार" के लिए इब्रानी भाषा में शामार (Shamar) शब्द का उपयोग किया गया है, पुराने नियमों में पहरेदार/पहरुए के लिए तीन शब्दों का प्रयोग हुआ है। आदम को बगीचे की देखभाल करने तथा उसकी रक्षा करने के लिए कहा गया था।

अन्य दो इब्री शब्द (Natsar) नाटसर और (Tsaphah) साफह है। ये तीनों इब्रानी शब्द हिफाजत और रक्षा, साथ ही साथ आक्रमण करने वाला और आक्रामक कार्य की ओर संकेत करते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि इन शब्दों का वास्तविक अर्थ है पहरेदारी करने के द्वारा रक्षा करना, हिफाजत करना और सुरक्षित रखना।

यूनानी भाषा में ''पहरेदारी करना'' शब्द के लिए दो शब्द ग्रिगोरियों (Gregoreuo) तथा अग्ररुपनियो (Agrupneo) है। दोनो शब्द 'रक्षा' की ओर संकेत करते हैं परंतु इनका अक्षरशः अर्थ है ''जागते रहना या सावधान रहना''। यह शब्द पहरेदार, गुप्तचर/भेदिया, चौकीदार से संबंध रखता है। जिनका काम होता है जागृत/सावधान रहना, खतरे के लक्षणों का सावधानी से निरीक्षण करना।

पुराने नियम के समय एक पहरुआ जिम्मेवार होता था (क) फसलों की रखवाली के लिए और (ख) नगर के शहरपनाह पर शत्रुओं पर नजर रखने के लिए। कटनी के दौरान (आत्मिकता के अभिप्राय में) पहरुओं का सेवा और भी ज्यादा आवश्यक /जरुरी हो जाता है। पूरे विश्व में यह कटनी का समय है, इसलिए वर्तमान में हमें पहरुओं की आवश्यकता है ताकि परमेश्वर के फसल पर निगरानी रखें (यूहन्ना 17:12) और उसकी रक्षा करें। पहरुए नगरों की शहरपनाह पर भी नियुक्त किये जाते थे ताकि वहाँ के नागरिकों की सुरक्षा और बचाव कर सके। (यशा 1:6–8, यशा 62:6, यहेजकेल 22:30)।

2.4 प्रार्थना और कार्य

प्रार्थना अपने आप में कोई अन्त नहीं है। प्रार्थना हमें परमेश्वर पिता, यीशु मसीह और पवित्रात्मा के साथ संगति में लाता है। जब हम यीशु के साथ संगति में आते हैं तो वह हम पर अपने हृदय की इच्छा को प्रकट करता है। और हमें जरुरतमंद लोगों के पास ले चलता है। प्रार्थना का उद्देश्य हमें परमेश्वर के महान आज्ञा (प्रेम करना .....) महान आदेश (जाओ ....) के अनुसार जीवन व्यतीत करने के लिए दृढ़ करना है। हम मात्र नाम के लिए प्रार्थना नहीं करते हैं, वास्तविक प्रार्थना हमेशा कार्य करने के लिए अगुवाई करता है : मसीह के प्रेम और अनुग्रह से लोगों के जीवन को प्रभावित करने के लिए अगुवाई करता है।

1. प्रार्थना हमेशा उद्देश्यपूर्ण जीवनशैली का मार्ग दर्शन करता है– यीशु के प्रेम और छुटकारे को ऐसे व्यक्तियों तक पहुँचाना है जिन्हें छुटकारा, शांति और चंगाई की आवश्यकता है।

2. प्रार्थना के नींव के ऊपर भवन बनाना, जैसे चेलों ने यीशु का अनुकरण किया, जहां कहीं वह गया।
3. प्रार्थना, जीवन को जरुरतमंदों के प्रति दयालु बनाता है।
4. प्रार्थना मसीहियों को शांति, सामंजस्य और एक दूसरे के साथ मेल–प्रेम से रहने के लिए आधार प्रदान करता है।
5. प्रार्थना हमारे जीवन को यीशु के साथ घनिष्ठता में लाता है।
6. प्रार्थना के द्वारा हम परमेश्वर से सामर्थ को प्राप्त करते हैं (पवित्रात्मा के द्वारा) ताकि संसार के अंत तक यीशु के प्रेम, छुटकारे और दया के गवाह बन सकें।

3. सामान्य दिशा-निर्देश

3.1 प्रार्थना पहरुओं के लिए स्थान

पूरे विश्व में लोग किसी भी तरह का स्थान प्रार्थना पहरुओं के लिए इस्तेमाल करते हैं।

- घर या फ्लैट
- गैरेज अथवा सामग्री कमरा, पीछे का कमरा, घर के उपर बना कमरा या घर का सबसे नीचे का कमरा, एक झोपड़ी
- गिरजाघर या प्रार्थना स्थल
- सर्मपित प्रार्थना कक्ष।
- प्रार्थना के लिए बनाया गया विशेष स्थान
- शोपिंग सेंटर या दफ्तर के किसी एक स्थान में
- जेलखाने के भीतर

3.2 लोगों को शामिल करने के लिए विभिन्न प्रयास

- जो प्रार्थना में रुची रखते हो ऐसे कुछ व्यक्ति एक–एक घण्टा लेकर प्रार्थना कर सकते हैं, 24 घण्टे का भरपाई।
- स्थानीय कलीसिया 24/7 को पूरा करने के लिए अपने आप को समर्पित करेगी अथवा हर सप्ताह में एक दिन के साथ शुरुआत कर सकते हैं।
- कुछ स्थानीय कालीसिया एक साथ मिलकर और हर कलीसिया सप्ताह में एक दिन लेकर इस 24/7/365 प्रार्थना पहरुवों को तैयार कर सकते हैं।
- एक समुदाय के लोग निर्णय ले सकते हैं कि 24/7 की आवश्यकता है अलग–अलग व्यक्ति, स्थानीय कलिसिया, प्रार्थना समूह और युवा समूह, एक साथ मिलकर प्रार्थना कक्ष को 24/7 प्रार्थना से भरेंगे।
- जवान लोग उच्च विद्यालय, विश्वविद्यालय में अथवा कॉलेजों के कैंपस में 24/7 प्रार्थना को स्थापित करने के लिए अपने आप को समर्पित कर सकते हैं।
- बच्चे (6–14 साल) इस प्रार्थना पहरुओं में कभी–कभी शामिल किये जा सकते हैं वे स्थापित किये हुए प्रार्थना पहरुओं में आपनी भूमिका निभा सकते हैं या हर सप्ताह कुछ घण्टे प्रार्थना के लिए अपने आप को समर्पित कर सकते हैं।

- पूरे विश्व में ऐसे लोगों की संख्या बढ़ रही है जो कुछ समयावधियों के लिए (कुछ महीने, एक साल या उससे अधिक) पूरा–पूरा समय प्रार्थना पहरुए में प्रार्थना मिशनरियों के रुप में सेवा करने के लिए समर्पित हो रहे हैं।

3.3 सहभागिता का आयाम/अधिकता

- कुछ अलग–अलग लोग एक दिन में एक घण्टा प्रार्थना करना चाहेगें।
- कुछ लोग सप्ताह में एक बार या दो सप्ताह में एक बार आ सकेगें।
- अन्य लोग समय–समय पर आते रहेगें।
- कुछ लोग सिर्फ एक घण्टे के लिए आयेगें, दूसरे लोग दो घण्टे या अधिक के लिए
- कुछ कलीसिया एक घण्टे ले सकती है, दूसरे दो घण्टों ले सकते हैं अथवा आधा घण्टा, कुछ समूह 15 मिनट ले सकते हैं। बच्चे 10–15 मिनट ले सकते हैं
- कुछ प्रार्थना पहरुए एक स्थानीय कालीसिया को सप्ताह में एक दिन या महीने में एक दिन प्रार्थना के लिए मांगेगे।
- कुछ प्रार्थना पहरुये अव्यवस्थित/मनमाने हो सकते है, जो लोग प्रार्थना के लिए अपने समय के अनुसार आना–जाना करेगें। दूसरे लोग कहीं अधिक अनुशासित और सहभागीयों को सही समय पर अपने खास जगह में प्रार्थना के लिए पहुंचने की अपेक्षा करेगें।

3.4 रात-दिन प्रार्थना पहरुओं के विभिन्न नाम

- चेन प्रार्थना
- प्रार्थना कमरे
- प्रार्थना के घर
- गरमाहट पैदा करनेवाले कमरे
- क्रियाशील प्रार्थना कक्ष
- 24/7 पहरुये
- प्रार्थना किला
- उर्जा घर
- प्रार्थना पर्वत

3.5 प्रार्थना पहरुओं के उद्देश्य

''प्रार्थना पहरुएँ'' उद्देश्य या कारणों के विशाल परिवर्त्तन के लिए स्थापित हो रहे हैं, उदाहरण के लिए :–

- स्तुति और अराधना केन्द्र के रुप में
- युद्ध और मध्यस्थता की प्रार्थना
- परमेश्वर के वचन की प्रार्थना करना (उदाहरण ग्लोबल प्रार्थना पहरुएँ, केप टाउन, दक्षिण अफ्रीका)
- एकान्त, शान्त, ध्यान, मनन और लौलीनता की प्रार्थना के लिए (Taize in France)
- आराधना का संयोग युद्ध और मध्यस्थता (i.e. International House of Prayer in Kansas City, USA)
- विश्व के राष्ट्रों के लिए प्रार्थना
- समुदाय के आधारभूत आवश्यकता के लिए प्रार्थना
- देश की जागृति, अर्थव्यवस्था और राजनीतिक परिस्थिति इत्यादि के लिए प्रार्थना
- स्थानीय कालीसिया के लिए प्रार्थना करना।
- उपर्युक्त पोइन्ट से संबंधित प्रार्थना से मिलता–जूलता

3.6 सहायक वेबसाइटें

- www.24-7prayer.com
- www.fotb.com
- www.jwipn.com
- www.xtremeprayer.com
- www.globaldayofprayer.com
- www.global27-7.org

4. प्रार्थना कक्ष का संचालन कैसे करें

4.1 24/7/365 प्रार्थना पहरुओं के लिए दिशा-निर्देश

- प्रार्थना पहरुए को लगातार 7 दिन तक चलाते रहना एक बात है परन्तु प्रार्थना पहरुए को लगातार 365 दिन तक सालों भर एवं उके बाद भी चलाना अलग बात है।
- अच्छे और मजबूत अगूवों की जरुरत है।
- काफी मात्रा में समर्पित मध्यस्थों का होना चाहिए, मध्यस्थों की संख्या इस बात पर निर्भर होगी कि आप किस प्रकार का पहरुए संचालित कर रहे हैं। हर प्रार्थना पहरुओं से एक दिन में 1 घंटा अपेक्षा करना वास्तविकता नहीं है।
- ध्यानपूर्वक योजना बनाना, स्पष्ट मार्गदर्शन, अच्छा प्रबंधन और प्रोत्साहन की आवश्यकता है। उपर्युक्त चारों चीजें सही ढंग से नहीं होने पर बहुतेरे पहरुए कुछ समय पश्चात् छोड़ देगें।
- इस तरह के प्रार्थना पहरुए को जारी रखने के लिए एक समूह/दल की आवश्यकता है। एक समान्य सहप्रबंधक/सह संचालक, सप्ताह के प्रत्येक दिन के लिए सह संचालक, एक व्यवस्था संबंधी समूह और एक उत्तम व्यवस्था संबंधी कार्यालय, एक समूह जो प्रार्थना के विषय को इकट्ठा कर सके, इन प्रार्थना के विषय वस्तुओं को ई–मेल अथवा छापकर मध्यस्तथों को उपलबध करा सके, एक समूह जो प्रार्थना करने के स्थान की सफाई और सजावट की जिम्मेदारी को लें, कोई एक व्यक्ति जो प्रार्थना के समय–सारणी का हिसाब किताब करे इत्यादि।
- प्रार्थना पहरुए में नये मध्यस्थों को शामिल करने की प्रक्रिया जारी रहना चाहिए। उन्हें उन लोगों का स्थान लेना चाहिए जो दूसरे नगरों या शहरों में चले गये हैं अथवा जो थक गये हैं, छोड़ दिये हैं अथवा जिनकी पहुँच की दशा बदल गई है जिससे वे किसी भी रीति से प्रार्थना पहरुए के भाग नहीं बन सकते।
- प्रार्थना पहरुए को जारी रखने के लिए मध्यस्थों को प्रोत्साहित करना तथा उनके लिए प्रबंध करना आवश्यक है। याद रखें कि उनमें से कुछ प्रार्थना पहरुए में व्यक्तिगत अथवा छोटे समूहों के सदस्यों के रुप में शामिल है और उनके पास आवश्यक रुप से अन्य मध्यस्थों के साथ संपर्क नहीं है। मध्यस्थता करने वाले लोग आसानी से अलगाव महसूस कर सकते हैं और फिर उत्साह खो सकते हैं। उन्हें मित्रता के लिए बारंबार एक जगह इकट्ठा करें।

- हर चार महीने में या छः महीने में एक बार सारे प्रार्थना पहरुओं को लेकर समुदाय में प्रार्थना यात्रा करना तथा प्रैकटीकल कमपेशनेट आउटरिच प्रोजेक्ट करना काफी मददगार साबित होगा।

4.2 स्थानीय कलीसिया में 24/7/365 प्रार्थना पहरुओं की स्थापना के महत्त्व और मूल-सिद्धांत

- रात–दिन प्रार्थना के दर्शन को प्रकाशित (बांटना) करे तथा दिन ब दिन, सप्ताह दर सप्ताह दर्शन प्रकाशित करने की प्रक्रिया को जारी रखें। लोगों को प्रोत्साहन और दिशा–निर्देश की आवश्यकता है।
- अगुवों को प्रार्थना की शक्ति और प्रार्थना की आवश्यकता पर विश्वास करना चाहिए। कलीसिया की अगुवाई में प्रार्थना का प्रगटीकरण किया जाना चाहिए।
- 24/7 को शुरु करने के लिए प्रार्थना प्रक्रिया को संग्रहित करें तथा ध्यानपूर्वक योजना बनाये।
- जिम्मेदारियों की नियुक्ति सावधानीपूर्वक करें। जैसे–जैसे पहुरुएँ बढ़ते है, आपको सहायता करने के लिए विशेष वरदानों से परिपूर्ण व्यक्तियों की आवश्यकता होगी जो व्यावहारिक/प्रयोगात्मक और आत्मिक जरुरतों में सहायता करेगें। उदाहरण के लिए आपको ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होगी जो दृढ़ व्यवस्था संबंधी और प्रबंधन कार्य में निपुण हो।
- 24/7 को कलीसिया की विभिन्न सेवकाईयों के साथ जोड़े।
- प्रार्थना सूचना के साथ लोगों से परस्पर बातचीत करना और सहायता करना जारी रखें। प्रार्थना के विषयवस्तुओं और प्रार्थना पत्रों को उपयोगी बनावें जो बाइबिल–संबंधी प्रार्थना के बुलाहट को पूरा करते है।
- एकता के महत्व को पवित्रात्मा में बरकरार रखें।
- आधुनिक समाज के आवश्यकताओं को समझें। हमलोगों की बुलाहट लोगों को प्रार्थना के लिए प्रोत्साहित करने के लिए की गई है। न कि उन पर दबाव डालने के लिए। लोगों को इसमें शामिल करने के लिए इसे सरल बनायें और यदि वे इसे कर पाने में असमर्थ हैं तो उनकी निन्दा न करें। प्रार्थना पहरुए में शामिल होने वाले लोग बेहतर मसीही नहीं है केवल इस वजह से कि वे प्रार्थना पहरुए के सहभागी हैं।

- व्यक्तिगत और पारिवारिक प्रार्थना के महत्व पर जोर दें– आपका जो व्यक्तिगत समय परमेश्वर के साथ है उसके बदले या उसके स्थान पर प्रार्थना पहरुए का प्रार्थना नहीं होना चाहिए।
- क्रियाशील बनें और बदलाव के लिए तैयारी करें–पढ़ें और सुनें। युवाओं को शामिल करते हुए ज्यादा क्रियात्मकता को प्राप्त करें।
- ''कैसे प्रार्थना करें'' इस विषय पर लोगों को स्थिर व्यावहारिक शिक्षा की आवश्यकता है।
- प्रार्थना का घर होना लोगों के लिए चुनौती के रुप में उपयोग होना नहीं है। यह एक बाइबिल संबंधी आदेश है। (मती 21:13)
- उन लोगों के लिए कक्ष निर्मित करें जो पूरे समय की सेवकाई के लिए प्रार्थना के घर में बुलाये गये हैं परमेश्वर पूरे समय पहरेदारी करनेवालों को पूरे संसार भर में खड़ा कर रहा है। उनकी पहली बुलाहट प्रार्थना के घर के अंदर हो रही है। आपके धार्मिक समुदाय में इन पुरुषों ओर स्त्रियों में से कुछ ऐसे भी हो सकते हैं जो प्रतिदिन परमेश्वर के सामने उपवास और प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर की सेवा करने की इच्छा प्रकट करेगें, नये नियम की हन्नाह की तरह (लूका 2:37)
- रात और दिन प्रार्थना पहरुए को क्रियाशील रखने के लिए तीन कुंजियाँ याद रखने योग्य हैं :– (क) व्यक्तिगत अनुशासन (ख) निरंतर परिश्रम (ग) व्यक्तिगत समर्पण।

4.3 सीमित समय के लिए प्रार्थना पहरुओं को स्थापित करने के दिशा–निर्देश (जैसे 7 दिन, 10 दिन, 21 दिन या 40 दिन)

अगले अनुच्छेदों में कुछ दिशा निर्देश हैं जो स्थानीय कलीसिया अथवा समुदाय में अल्प समय अवधियों के प्रार्थना पहरुए की स्थापना में उपयोग किये जा सकते हैं। (जैसे 7 दिन, 10 दिन, 21 दिन या 40 दिन)

सामान्य दिशा निर्देश :-

- 7 दिनों के प्रार्थना पहरुए अथवा प्रार्थना कड़ी में अलग–अलग व्यक्तियों, समूहों, कलीसियाओं, नगरों/शहरों अथवा क्षेत्रों/प्रान्तों को शामिल किया जा सकता है।
- कलीसियाएँ सप्ताह में एक बार चौबिसों घंटे प्रार्थना पहरुए के साथ शुरुआत कर सकते हैं और जैसे–जैसे लोगों की सहभागिता बढ़ती है वे अधिक दिनों तक प्रार्थना में समय

बिता सकते हैं शीघ्र ही एक दिन के सभी घंटों को भरने के लिए पर्याप्त मध्यस्थ मिल जायेगें, इस प्रार्थना कड़ी को एक दूसरे प्रार्थना कड़ी की स्थापना के द्वारा मजबूत किया जा सकता है। जो समान तरीके से संचालित हो। प्रार्थना चौकसी/प्रार्थना पहरुए के घंटे अलग–अलग व्यक्तियों, प्रार्थना समूहों, युवा समुहों, Cell Group द्वारा ग्रहण किये जा सकते हैं।

- प्रत्येक कलीसिया को अन्य कलीसिया या बहुत सी कलीसियाओं के साथ संधि/समझौता/मित्रता करना चाहिए। एक दूसरे को 24/7 प्रार्थना पहरुए (सप्ताह के सातों दिन चौबिसों घंटे) को स्थापित करने के लिए भी प्रोत्साहित करना चाहिए।
- स्थानीय कलीसिया को चौबिसों घंटे प्रार्थना पहरुए की निर्माणकारी नींव की पत्थर के समान योजनाएँ/नमूने (आदर्शों) 24/7 प्रार्थना को प्रोत्साहित करने के लिए उपयोग में लाये जा सकते हैं।
- प्रत्येक 24 घंटे प्रार्थना कड़ी के लिए एक प्रबंधक और एक उप/प्रबंधक की नियुक्ति करें।
- एक प्रार्थना पहरुआ दो तरीके से कार्य कर सकता है (क) चर्च या कहीं और एक केन्द्रीय सम्मेलन स्थान की तलाश करें जो दिन के चौबिसों घंटे उपलब्ध हो सके, जहाँ लोग प्रार्थना करने के लिए इक्टठे हो सकें। या (ख) इस विषय को लोगों और समूहों पर छोड़ दें कि वे इस बात को निश्चित करें कि वे अपने प्रार्थना के घंटों के लिए कहाँ इकट्ठा होना चाहते हैं (उनके अपने घरों में आदि)।

ये दिशानिर्देश मात्र सुझाव है, रचनात्मक/क्रियात्मक बनें। परमेश्वर की आत्मा आपको पूर्णतः अलग तरीके से विषय की गहराई तक जाने में अगुवाई करें। प्रार्थना करने के सही और गलत तरीक नहीं होते।

7 दिवसीय प्रार्थना कक्ष का संचालन कैसे करें :-

- 7 दिवसीय प्रार्थना अवधि का संचालन रविवार की मध्यरात्रि से लेकर अगले रविवार की मध्यरात्रि तक किया जा सकता है।
- 24/7 प्रार्थना की छोटी पुस्तक (जिनका शीर्षक गरमाहट लाने वाला कक्ष की खासकर युवाओं के लिए) www.xtremeprayer.com पर उपलब्ध है।

- एक कमरे या जगह की तलाश करें और इसे सात दिनों के प्रार्थना कक्ष में बदल दें। एक विशेष/खास प्रार्थना कक्ष जिसमें लोग अच्छी रीति से कार्य कर सकें। दृढ़ बने और प्रार्थना कक्ष में आकर प्रार्थना करें और लोगों को प्रोत्साहित करें।
- आवश्यकतानुसार सुरक्षा की व्यवस्था करें जरुरत पड़ने पर सुरक्षा व्यवस्था करें।
- यदि बहुत सी कलीसियाएँ एक 24/7 में सहभागी है तो प्रार्थना कक्ष किसी एक ही कलीसिया विशेष न हो। प्रार्थना स्थल सामान्य हो।
- यदि संभव हो तो पर्याप्त मात्रा में चाय, कॉफी और पानी का प्रबंध करें।
- उदाहरण के लिए आप 7 दिन के प्रार्थना पहरुए में शामिल हुए सभी लोगों को व्यवहारिक ज्ञान के लिए स्कूल, थाना, खरीददारी केन्द्र, टैक्सी पड़ाव या छोटे बाजार और जिस स्थान पर लोग कार्य करते हैं उस स्थान पर प्रार्थना करने के लिए कह सकते हैं। आप एक या 7 दिन की प्रार्थना चौकी (Prayer Stall) बना सकते हैं। ताकि जिन व्यक्तियों को प्रार्थना की जरुरत है वे प्रार्थना निवेदनों के साथ आ सकें।
- याद रखें कि यह काम किसी एक व्यक्ति के लिए बहुत बड़ा है। इसलिए सप्ताह भर के व्यवहारिक प्रार्थना में आपकी मदद करने के लिए कुछ ऐसे लोगों को चुन लें जो प्रबंधन के वरदानों से भरे हों, कुछ स्वयंसेवक (Volunteer) से मदद मांगे जो परिवहन संबंधी कामों में मदद करें। विशेष कर रात के समय लोगों को प्रार्थना कक्ष तक पहुंचने में।
- प्रार्थना स्थल में स्तुति–अराधना दल को शामिल करें और इन दलों को दो घंटे तक प्रार्थना स्थल में स्तुति आराधना करने के लिए आमंत्रित करें। इस कार्य को दिन में एक दो बार करें।
- बुजूर्ग और माताओं के लिए दिन के दौरान प्रबन्ध करें, कि वे बच्चों के साथ समूह में शामिल हो सकें और जवानों के लिए सप्ताह के अंत में प्रबंध करें। जवान लोग शुक्रवार या शनिवार को पूरी रात रुकना पसन्द कर सकते हैं।
- जरुरत मंदों तक पहुंचना : सप्ताह के दौरान प्रार्थना करने आने वाले लोगों को कपड़ा, भोजन, फर्निचर और कम्बल लाने के लिए कहा जा सकता है ताकि जरुरतमंदों को दिया जा सके। जब परिवार में यह उपहार दिया जाये तब उस परिवार के लिए प्रार्थना करें यीशु के नाम में उन्हें आशीष दें।

अन्य तरीके :-

- स्कूलों को (यहाँ तक कि जेलखानों को) 7 दिन तक लगातार प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित करें, स्कूल में पढ़ाई के क्रम में माता–पिता प्रार्थना समय को भर सकते हैं और विद्यार्थीगण दोपहर और संध्या के समय जिम्मेदारी उठा सकते हैं।
- युवा समुह को Adventure (साहसिक कार्य) के लिए ले जाए सप्ताह के अन्त में 40 घंटे प्रार्थना पहुरुए शुक्रवार 6 बजे से लेकर रविवार 12 बजे तक
- सप्ताह के अन्त में या छुट्टियों के दौरान 24/7 प्राथर्ना की संकल्पना 'एकांत अधियारे जगह तथा शत्रुओं के द्वार के सीढ़ियों तक ले जाये, उसी समय आप उन्हें यीशु के प्रेम के बारे बतला सकते हैं।
- एक सप्ताह के लिए 24/7 को नजदीकी पुलिस स्टेशन ले जायें, आप समूदाय के समस्याओं को नजदीकी से समझ पायेंगे।
- पास्टरों का समूह अपने पत्नियों के संग 24/7 का साहसिक कार्य आरम्भ करके समुदाय और राज्य में एकता के लिए अपने समपर्ण को दर्शा सकते हैं।
- E-mail के माध्यम से एक 24/7 स्थापित करें।
- व्यवसायी पुरुषों एवं महिलाओं को 24/7 के लिए प्रोत्साहित करें, वे 5 दिनों के लिए कर सकते हैं, विशेष सप्ताहों में 6–18 घंटों तक
- रचनात्मक बनें। हो सकता है परमेश्वर आपकी तरीके में रुची लेता हो, बिल्कुल नया लगनेवाले अपने रचनात्मक तरीकों से भयभीत न हो परमेश्वर की आत्मा रचनात्मक है उसी ने आपकी रचना की है।
- वचन आधारित प्रार्थना पहुरुए को निरुपित करें, उदाहरण के लिए बाइबल लें और एक सप्ताह के लिए रात–दिन इसमें से प्रार्थना करें, उत्पति 1 अध्याय से आरम्भ करें, जितने लम्बे समय तक आप उसमें से प्रार्थना कर सके करें तथा दुबारा फिर से शुरुआत करें, दूसरी सम्भावना यह है कि भजन संहिता लें और 7 दिन तक उसमें से प्राथना करें।

4.4 प्रार्थना पडावों के साथ वार्तालापीय प्रार्थना कक्ष का उदाहरण

24/7 प्रार्थना पहल की शुरुआत वार्तालापीय प्रार्थना कक्ष के अवधारणा को फैलाने के लिए किया गया। गुजरे समय में प्रार्थना कक्ष मात्र एक स्थान होता था जहाँ लोग आकर कुछ समय प्रार्थना में बिताते थे। लेकिन इंग्लैण्ड में कुछ जवानों ने एक कमरे को लेकर इसे सजाना

शुरु किया, उन्होंने दीवारों और खाली फर्शों को ‘‘प्रार्थना पड़ाव’’ बनाने के लिए इस्तेमाल करना शुरु किया जहाँ लोग प्रार्थना कर सके।

उन्होंने सामान्य तौर पर प्रार्थना दीवार (Prayer wall) इस नाम का प्रयोग किये। एक प्रार्थना कक्ष में आप आदर्श रुप में इन बातों को पा सकते हैं :–

- आराधना की दीवार (एक ऐसा कोना जहां आप संगीत सुन सकते हैं और परमेश्वर के सामने शांत होकर रह सकते हैं)।
- दुःख का दीवार (Wailing wall) (एक ऐसा स्थान जहां ऐसे परिवारों, मित्रों, और हर व्यक्तिगत लोगों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं जो उद्धार नहीं पाये हैं, विश्व के मानचित्र के इस्तेमाल के द्वारा या व्यक्तिगत लोगों के नामों को लिखकर बोर्ड में चिपका सकते हैं जिनके लिए वे प्रार्थना करना चाहते हैं)।
- धन्यवाद ज्ञापन दीवार (एक ऐसा स्थान जहां लोग परमेश्वर को धन्यावादी लेख लिखकर उन्हें दीवार पर चिपका सकते हैं या बॉक्स में डाल सकते हैं, इत्यादि)।
- रचनात्मक दीवार (जिस जगह पर कुछ पन्नों को लटकाया जाता है जहां लोग आकर उन पन्नों पर अपनी कला, चित्रकलाओं, कविताओं इत्यादि के द्वारा अपने समर्पण (Devotion) को दर्शा सकते हैं)।
- वचन की दीवार (Scripture Wall) (एक ऐसी जगह जहां कुछ वचनों को लिखकर चिपकाया जाता है, जिससे लोग प्रार्थना कर सकें और कोई भी प्रार्थना के लिए अन्य वचनों को जोड़ सकें।)

इसे करने के बहुत से तरीके हैं, लेकिन इसका मकसद रचनात्मक होना है। प्रार्थना पड़ाव के प्रकार और संख्या की संभावना इस बात पर निर्भर है कि हम कमरा/कक्ष की सजावट कैसे करते हैं, इसकी संख्या अपरिमित है। प्रार्थना पड़ावों के नामों को बदला जा सकता है, और भी नामों को जोड़ा जा सकता है साथ ही कुछ को हटाया भी जा सकता है। यह प्रार्थना कक्ष के मकसद पर, कक्ष के आकार पर, सजावट सामग्री के उपलब्धी पर, प्रार्थना कक्ष का इस्तेमाल करने वालों के उम्र सीमा इत्यादि पर निर्भर करता है।

नीचे दिये गए उदाहरण में आपको विशेष तरीका ज्ञात होगा कि इसे कैसे करें। इस बात को समझना महत्वपूर्ण है कि यह उदाहरण मात्र इसलिए दिया गया है कि हम जाने क्या किया जा सकता है। कृपया इसे आप अपने रचनात्मक तरीके से करें, इस उदाहरण में 13 प्रार्थना पड़ावों को शामिल किया गया है। जिसका मतलब 13 क्षेत्रों को सजा सकते हैं। जिससे प्रार्थना

में शामिल होने वाले ज्यों ही प्रार्थना कक्ष में प्रवेश करे उसे और भी अधिक क्रियात्मक रुप से शामिल होने में मदद मिल सके।

ये 13 प्रार्थना पड़ाव मात्र उदाहरण है कि क्या किया जा सकता है।

(क) क्रूस की ओर ताकना

- मन में विचारने का समय, परमेश्वर से पूछना कि कौन सा पाप उसके नजदीकी में जाने से रोकती है उसको प्रकट करें। फिर उस पाप को क्रूस पर ठोंक दें
- वचन : कुलूसियों 2:13, 14 रोमि 6:6, गलातियो 2:20, मती 16:24, यशायाह 1:18, गलतियों 5:24
- आवश्यकता है : क्रूस (दो सीधी लकड़ी से बना हुआ) हथौड़ा, कील, रंगीन कागज का टुकड़ा, कलम फर्श पर लाल कपड़ा जिस पर क्रूस पड़ा हो, 1 छोटा लैम्प विस्तर के बगल में वाला।

(ख) छिपा हुआ चाल/गहराई की चाल

- परमेश्वर के साथ अपने संबंध को दर्शाये और अपने आप को परमेश्वर के सामने नया बनाने का वाचा बांधें।
- वचन : रोमि 12:12, 2 कुरि0 3:18
- आवश्यकता है : जगह को सजाने के लिए सफेद कपड़ा (भक्तों के धार्मिकता को चिन्हीत करने के लिए) A4 साइज का पेपर (कागज), कलम, कुर्सीयां, तकिया, पीछे से तेज रोशनी वाली बत्ती।

(ग) याद करने के लिए चलें / याद किये जाने का दीवार

- यह परमेश्वर के लिए वेदी हो सकती है, जहां आप परमेश्वर के वायदों को जो दिया है और पूरा किया है उन्हें लिख सकते हैं। इसे एक सफेद पत्थर और उस पत्थर पर धन्यवाद का बलिदान का बेदी जोड़ सकते हैं। अथवा आप ईंट से दीवार खड़ी कर सकते हैं और लोग उस पर परमेश्वर के वायदों को जो वायदे पूरा हुआ उसे लिख सकते हैं और दीवार को खड़ा करने के द्वारा उसे धन्यवाद दें।

- वचन : यूहेशू 4:21–24, भजन सं. 26:7, फिलि0 4:6–7, यहेजकेल 22:30, यशायह 62:6, 2 कुरि0 1:20,
- आवश्यकता है : छोटे पत्थर (50), स्थायी चिन्हित करने वाला, काला प्लास्टिक (जिस पर पत्थर रखा जाएगा), 30 ईंट या बड़ा कागज जिससे दीवार पर ईंट बनाया जा सके, तेज रोशनी दीवार पर या एक बत्ती जो बेदी पर हो।

(घ) कुम्हार का घर

- ऐसा जगह जहाँ लोग आकर बरतन, सजावटी वस्त्र बना सकें और परमेश्वर के कार्य को अपने जीवन में ध्यान कर सकें।
- वचन : यशायाह 64:8, रोमि 9:21
- आवश्यकता है : टेबल (कागज या प्लास्टिक से ढका हुआ) मिट्टी, कुर्सियाँ, और छोटी लैम्प

(ङ) मेरे साथ भोजन करो

- मेज की टेबल
- वचन : प्रकाशित वा0 3:20, यूहन्ना 6:53–55, मती 26:26–28
- आवश्यकता है : टेबल, टेबल क्लोथ, कप, प्लेट, जूस, रोटी, कुर्सीयां टेबल पर धीमी रोशनी, 2 मोमबत्ती माचीस/छोटा लैम्प

  प्रार्थना कमरा का अगला रुप समुदायों और (आकृति) बाकी की दुनिया की ओर केंन्द्रित होना चाहिए।

(च) सोने की कटोरी/ विलाप का दीवार/ सुगंध की वेदी

- एक जगह जहाँ लोग खोये हुओं के लिए प्रार्थना निवेदन को ला सके। अथवा कुछ भी आवश्यकता जो उनके जीवन में हो। इसे दिलचस्प जगह बनाएं कागज के टुकड़े को तार से लटकाकर अथवा उसे तारों के द्वारा लटका दें, कपड़ों का इस्तेमाल करें, इस जगह को उपर से दो छोटे तेज रोशनी वाली बत्ती (Floodlights) से रोशनी करें।
- वचन : मती 7:7, मती 21:22, यूहन्ना 14:13–14, 1 यूहन्ना 5:15, प्रकाशितवाक्य 5:8, प्रकाशितवाक्य 8:3–4

- आवश्यकता है : तार, रस्सी, रंगीन कागज के टुकड़े, कलम, सुनहला कटोरी, कपड़े और 2 छोटे तेजरोशनी वाली बत्ती। (Floodlights)

(छ) वास्तविक दीवार

- समुदाय और विश्व की आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना करें
- वचन : मती 18:19, फिलि0 4:19
- आवश्यकता है : टंगा हुआ अखबार, दीवार पर चिपकाने के लिए कुछ सामग्री, उपर से दो छोटे तेज रोशनी वाली बत्ती (Floodlights)।

(ज) गढ़ों को तोड़ना

- एक छोटा बंदीगृह बनायें, अन्दर एक छोटा टेबल, अखबार, कलम (पेन) कूड़ेदान, मोमबत्ती, माचीस, तश्तरी, जग, तौलिया, के साथ रखें। लोगों को कागज के टूकड़ों पर अपने समाज के बंधनों को लिखना है जो परमेश्वर के ज्ञान के विरूद्ध है। उदाहरण के लिए दारु (अल्कोहल), कामुकता में लीन, कामोद्दीपक लेख या चित्र, मूर्तिपूजा, खूनी–दरिंदा आदि। उसके बाद उस कागज को जलाए और कूड़ादान में फेंक दें।
- वचन : यूहन्ना 8:32, यूहन्ना 8:36,यशायाह 61:1
- आवश्यकता है : कमरों को तीन भागों में बांटने वाला, काला कपड़ा दो बंदीगृह का खिड़की बनाने के लिए लकड़ी के 14 पतले टुकड़ों अथवा बांस, छोटा टेबल, कागज, कलम, कूड़ादान, मोमबत्ती, माचीस।

(झ) मनुष्यों को पकड़नेवाला

- आप अपने राष्ट्र और विश्व के राष्ट्रों के लिए प्रार्थना करें। उस राष्ट्र में वचन बोने को दर्शाने के लिए गेहूँ का दाना इस्तेमाल करें
- वचन : भजन संहिता 2:8, उत्पति 24:16, व्यावस्था विवरण 1:21, दानियेल 7:18, मती 24:14
- आवश्यकता है : कमरे को बाँटने वाले 2 वस्तु, विश्व का मानचित्र, अपने राष्ट्र का मानचित्र, मछली पकड़नेवाला जाल, गेहूँ का दाना, मानचित्रों पर चिपकाने के लिए पदार्थ, ऊपर से मानचित्रों पर तेज रोशनी वाली बत्ती।

(ञ) सुहावने पाँव (Beautiful Feet)

- ऐसा जगह जहाँ लोग एक दूसरे के पैर धो सकें, एक दूसरे के मेल-मिलाप के लिए प्रार्थना कर सके।
- वचन : यूहन्ना 13:5, यूहन्ना 13:14, 2 कुरि 5:18, मती 5:24
- आवश्यकता है : 6 कुर्सी, 3 तश्तरी, 3 बाल्टी, 3 जग, 6 तौलिया, 1 लैंम्प

और अन्त में प्रार्थना कमरा में कुछ जगह ऐसा होना चाहिए जो परमेश्वर की ओर ध्यान करने के लिए हो। उसके राज्य और उसके महिमा/आराधना के लिए जगह।

(ट) गुप्त जगह/सिंहासन का कमरा

- एक जगह जहाँ बैठ कर परमेश्वर के चरित्र का मनन चिन्तन कर सकें उसके नामों को, वह कौन है जिसके लिए उसकी आराधना करें।
- वचन : भजन संहिता 95:6, श्रेष्ठगीत 2:10, यशायाह 55:1, प्रकाशित वाक्या 4:1, मती 11:28
- आवश्यकता है : बैगनी कपड़े, सफेद, सोना, मोटे कागज जिस पर परमेश्वर के नामों को लिखा गया है। कुर्सीयां/गद्दा, पानी का झरना, पौधे, कपड़े के पीछे से तेज रोशनी और एक नीचे से, परमेश्वर के नामों की ओर रोशनी करना।

(ठ) वचनानुसार चौकसी

- एक जगह जहाँ लोग बैठ कर वचन पढ़ सकें अथवा एक भजन संहिता का ध्यान और चिन्तन कर सकें जिसे वे पढ़ रहे हों।
- आवश्यता है : छोटी टेबल, कुर्सीयां, एक बत्ती और कुछ बाईबल।

(ड) रचनात्मक दीवार

- एक जगह जहाँ लोग लिख सकें, चित्र बना सकें, अथवा दिवार पर खोद कर कुछ रंग सके।
- आवश्यकता है : टेबल (प्लास्टिक या अखबार से ढका हुआ), रंग, कागज के टुकड़े, पिन, रंगीन पेन, रंगीन पेंसिल इत्यादि।

5. प्रार्थना में एक घंटा कैसे व्यतीत करें : एक घंटा प्रार्थना की रुपरेखा

एक घंटा ले और उसे 12 x 5 मिनट में विभाजित कर दें हर भाग के लिए 5 मिनट प्रार्थना करने के द्वारा आप 1 घंटे को प्रार्थना से भर देगें।

मेरे चेहरे को ढूढ़ो (भजन 27:8)

1. मेरे नाम को पुकारने के द्वारा मेरे चेहरे को ढूढ़ों (5 मिनट)

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के निम्नलिखित नामों पर प्रार्थनापूर्वक मनन करें :–

परिपूर्ण संतुष्ट करनेवाला (एलशदाय) उत्पति 17:1, प्रेरित और हमारे विश्वास का महायाजक इब्रानियों 3:1, तरस खानेवाला और दयालू परमेश्वर–भजन 86:15, जितने उसे ढूढ़ते है उन सबको प्रतिफल देनेवाला, इब्रा 11:6, अद्भूत कार्य करनेवाला निर्ग, 15:11, मार्ग सत्य और जीवन मैं ही हूँ, यूहन्ना 14:6 समस्त सामर्थ जिसका है वो, परमेश्वर (इलोहिम) उत्पति 1:1, परमेश्वर पूर्ति करेगा, पूर्ति करनेवाला (यहोवा–यिरे) उत्पति 22:8–14, शांति का परमेश्वर, परमेश्वर विश्राम देता है (यहोवा–शलोम), न्यायियों 6:24 परमेश्वर जो निहारता है (एल–रोई) उत्पति 16:13, 14 प्रभू जो तुम्हें चंगा करता है (यहोवा–राफा) निर्ग 15:26, संकट में सहायता करनेवाला–भजन 46:2, यीशु मसीह आज, कल और युगानुयुग एक सा है इब्रा. 13:8, मेम्ना जो बध किया गया–प्रका. 5:12 सर्वशक्तिमान परमेश्वर ''वीर'' (एल–गिब्बोर) यशा. 9:6,7, आग का खम्भा, जर्कयाह 2:5, युद्ध में पराक्रमी भजन 24:8, सलाहकार–यूहन्ना 14:16, सहायक –रोमी. 8:26, बुद्धि की आत्मा–यशा. 11:2, समझ की आत्मा, यशा. 11:2, सामर्थ और सलाह की आत्मा, यक्षा 11:2, परमेश्वर का भय और ज्ञान की आत्मा यशा. 11:2, प्रार्थना और निवेदन की आत्मा, जर्कयाह 12:10

2. व्यक्तिगत जागृति के लिए मेरे चेहरे को ढूढ़ों (5 मिनट)

अपने आप से निम्नलिखित प्रश्नों को पूछे :–

- क्या मेरे जीवन में कोई ऐसा पाप है जिसे मैं जानता हूँ और अंगीकार नहीं किया?
- क्या मेरे जीवन में कडुवाहट और क्षमाहीनता है?
- क्या मेरे जीवन में कोई संदेहपूर्ण व्यवहार या कार्य है?
- क्या मैं सभी बातों में फूर्ति से पवित्र आत्मा का आज्ञा मानता हूँ?

- क्या मैं यीशु का अंगिकार बिना लज्जा के करता हूँ?

3. आपके परिवार और मित्रों के लिए जो उद्धार नहीं पाये है, मेरे चेहरे को ढुढ़ो (5 मिनट) :-

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

उनके उद्धार के लिए प्रार्थना करें कि परमेश्वर उन्हें (आत्मिक, सामाजिक और भावनात्मक) तौर से आशिष दे, और उनके जरूरतो के लिए प्रार्थना करें ।

4. कलीसिया के लिए मेरे चेहरे को ढूढ़ो (5 मिनट)

आपकी स्थानीय कलीसिया और अन्य कलीसिया के लिए प्रार्थना के 5 बातों को लिखें ।

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

और/अथवा

- कलीसिया के लोगों के लिए प्रार्थना करें कि वे समस्त राष्ट्रों के लिए प्रार्थना के घर के रूप में फिर से एकत्रित हो जाए (यशा 57:7, मत्ती 21:13)
- कलीसिया के लोगों के लिए प्रार्थना करें ताकि वे महान आदेश को पूरा कर सके (मत्ती 28:18–20)
- कलीसिया के लोगों के लिए प्रार्थना करे ताकि वे महान आज्ञा को पूरा कर सकें (मत्ती 22:37–40)
- कलीसिया में आत्मिक जागृति के लिए प्रार्थना करें (इफि. 3:17–23)

- एक कलीसिया के लिए प्रार्थना करें कि वे वचन के प्रति विश्वास–योग्य हो तथा लोगों के जरूरतों को सामने रख सके (2 तीमु 3:1–17)

5. आपके व्यक्तिगत जरूरतों के लिए मेरे चेहरे को ढूढ़ों (5 मिनट)

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

6. मेरे वचनों से प्रार्थना करने के द्वारा मेरे चेहरे को ढूढ़ों (5 मिनट)

भजन संहिता के द्वारा क्रमानुसार प्रार्थना करने के साथ शुरूआत करें । हर समय 2–3 भजन संहिता पढ़े और प्रार्थना करें ।

7. मेरी सुनो और मेरी बाट जोहने के द्वारा मेरे चेहरे को ढूढ़ों (5 मिनट)

उसे निहारने और उसकी सुनने के द्वारा उसके चेहरे का ढूढ़ना : पढ़ें यशा. 42:8,9, दानियेल 9:9,10 और भजन संहिता 25::4,5। प्रभू से कहें कि वो नई बातों को आप पर प्रकाशित करें, वो चीजे जिसे पर वो चाहता है कि आप ध्यान दे एवं चितन–मनन करे। उससे कहें कि वो अपनी इच्छा और योजनाओं/विचारों को आप पर प्रगट करें । उससे कहे कि वो उन बातों को प्रगट करें जो उसके हृदय में है और वो चाहता है कि आप उन बातों के लिए प्रार्थना करें । उन बातों को लिखें जिसे आपने महसूस किया कि वो आप से कह रहा है।

8. पाप के गढ़ो को ढा देने के लिए प्रार्थना करने के द्वारा मेरे चेहरे को ढूढ़ो कि लोग अपने पापों का अंगीकार कर सके (5 मिनट)

- अनैतिकता
- जादू–टोना और मूर्तिपूजा
- अन्याय : चोट पहुँचाने वाला व्यवहार और कार्य
- जाति विशिष्ट : जातिवाद घृणा और जाति संबंधी घमण्ड

- अपवित्र वाचा

और/अथवा

कुछ विश्वव्यापी संकटों के लिए मेरे चेहरे को ढूढ़ों

- एच. आई. वी./ एड्स संबंधी रोग
- जरूरतमंदो और गरीबों की बढ़ती हुई संख्या
- सभी स्तर पर भ्रष्टाचार
- बहुतेरे देशों में सतावट का सामना करनेवाली कलीसिया
- युद्ध, खून–खराबा, जातिवाद हिंसा साथ ही लाखों शरणार्थी के लिए प्रार्थना करें
- बुरे व्यवहार और स्वार्थ के द्वारा पीड़ित बच्चों के लिए

9. राष्ट्रों के लिए मेरे चेहरे ढुढ़ो (5 मिनट)

5 देशों के नामों को लिखे और उनके लिए प्रार्थना करें

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

- जागृति के लिए
- जिन तक अबतक सुसमाचार नहीं पहुँचा और जो उद्धार नहीं पायें हैं उनके उद्धार के लिए प्रार्थना करें ।
- परिपक्व और परमेश्वर के भय मानने वाले अगुवों के लिए
- यीशु के समर्पित अनुयायियों के संख्या में बढ़ोत्तरी के लिए
- स्थानीय कलीसिया में विशेष कार्य (Mission) के लिए दर्शन को जगाना

और/अथवा

- प्रार्थना करे कि राष्ट्र इस बात को देख सके कि यीशु मसीह ही मार्ग, सत्य और जीवन है (यूहन्ना 14:6)
- प्रार्थना करें कि पृथ्वी के ऐसे लोग जिन तक सुसमाचार नहीं पहँचा, उन तक सुसमाचार के साथ पहूँचा जा सके (लूका 24:46–48)

- परमेश्वर की शांति और महिमा देशों और राष्ट्रों में आने के लिए प्रार्थना करें (जकर्याह 9:10)
- राजा और सरकार यीशु को राजाओं का राजा करके स्वीकार करने के लिए प्रार्थना करें (यशा 49:7)
- प्रार्थना करें परमेश्वर राष्ट्रों को आशिषित करें (यिर्मयाह 4:1–2)

10. मेरी इच्छा इस पृथ्वी पर पूरी होने के लिए मेरे चेहरे को ढूढ़ो (5 मिनट)

- पूरे पृथ्वी पर परमेश्वर की महिमा के प्रकाशन के लिए
- राष्ट्रो के चंगाई के लिए
- सभी स्तरों पर मेल–मिलाप / शुद्धिकरण के लिए (परिवारिक, कलीसिया, जाति समूह) अथवा कुटुम्ब, देशों इत्यादि।
- मनुष्य के जीवन को खत्म करने वाले गढ़ों, बनावट और राजनीतिक तौर–तरीकों को तोड़ने के लिए ।
- राष्ट्रों पर परमेश्वर की आशिष के लिए प्रार्थना करें

और/अथवा

- लोग मेरे साथ तथा आपस में मेल–मिलाप करें इसलिए मेरे चेहरे को ढूढ़ें (5 मिनट)
- प्रार्थना करें कि यदि राष्ट्रो ने अपने लोगों या अन्य राष्ट्रो के साथ दुर्व्यवहार किया हो या चोट पहुँचाया हो तो अपने हर आचरण को बदले
- हर स्तर पर मेल–मिलाप के लिए प्रार्थना करें (परिवार में, महिलाओं और बच्चों को उत्पीडन, कलीसियाओं एवं संस्थावाद, जाति–समूह या कुटुम्ब, राज्यों के बीच इत्यादि)
- मनुष्यों के जीवन को बर्बाद करने वाली राजनीतिक तौर–तरीके बनावट और गढ़ो को दूर करने के लिए प्रार्थना करें।
- प्रार्थना करें कि लोग एक–दूसरे के गलतियों को क्षमा करें ।

11. युवाओं के लिए मेरे चेहरे को ढूढ़ो

- ताकि इस पीढ़ी के युवा अपने पीढ़ी के युवाओं तक सुसमाचार के साथ पहुँच सकें ।

- युवाओं के लिए प्रार्थना करें कि वे नए रीति से परमेश्वर के घनिष्टता में आए और उसके आज्ञाकारी रहे।
- मौलिक स्वभाव, समर्पित चेले जो पवित्रता से जीता हो ।
- पूरे हृदय से परमेश्वर की सेवा करें और जहाँ कहीं वो उसकी अगुवाई करें वहाँ उसका अनुसरण करें ।
- दयालु हृदयों के लिए जो गरीबों और दयनीय लोगों तक पहुँचे और उनकी सेवा करें

12. स्तुति और आराधना के साथ मेरे चेहरे को ढूढ़ों

अपने प्रार्थना के समय को स्तुति और आराधना के साथ समाप्त करें । भजन संहिता 144–150 में में से किसी एक को पढ़ें । परमेश्वर के किए हुए भलाईयों के लिए धन्यवाद करें और एक दूसरे को व्यक्तिगत रूप से प्रभू यीशु मसीह के नाम से आशिष देने में समय व्यतीत करें ।